पाठ 13

अमर शहीद भगत सिंह के पत्र

(भगत सिंह समय-समय पर अपने हितैषियों को पत्र लिखते रहते थे। उन पत्रों से उनकी देशभक्ति, त्याग-भावना और स्वदेश के लिए सर्वस्व अर्पित करने की दृढ़ कामना का परिचय मिलता है। इस पाठ में उनके कुछ पत्र दिये गये हैं।)

(1)

(जेल में माँ से भेंट न होने पर भाई कुलबीर सिंह को पत्र)

प्रिय भाई कुलबीर सिंह जी !

सत श्री अकाल।

मुझे यह जानकर कि एक दिन तुम माँ जी को साथ लेकर आये और मुलाकात का आदेश नहीं मिलने से निराश होकर वापस लौट गये, बहुत दुःख हुआ। तुम्हें तो पता चल चुका था कि जेल में मुलाकात की इजाजत नहीं देते। फिर माँ जी को साथ क्यों लाये ? मैं जानता हूँ कि इस समय वे बहुत घबरायी हुई हैं, लेकिन इस घबराहट और परेशानी का क्या फायदा, नुकसान जरूर है, क्योंकि जब से मुझे पता चला कि वे बहुत रो रही हैं, मैं स्वयं भी बेचैन हो रहा हूँ। घबराने की कोई बात नहीं, फिर इससे कुछ मिलता भी नहीं।

सभी साहस से हालात का मुकाबला करें। आखिरकार दुनिया में दूसरे लोग भी तो हजारों मुसीबतों में फँसे हुए हंै। और फिर अगर लगातार एक बरस तक मुलाकातें करके भी तबीयत नहीं भरी तो और दो-चार मुलाकातों से भी तसल्ली न होगी। मेरा ख्याल है कि

फैसले और चालान के बाद मुलाकातों से पाबन्दी हट जायेगी, लेकिन माना कि इसके बावजूद मुलाकात की इजाजत न मिले तो..... इसलिए घबराने से क्या फायदा ?

तुम्हारा भाई,

भगत सिंह

सेंट्रल जेल, लाहौर

3 मार्च, 1931

(2)

(बलिदान से एक दिन पहले कैदी साथियों को लिखा गया अन्तिम पत्र)

साथियो ! 22 मार्च, 1931

साथियों !

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं इसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मैं एक शर्त पर जिन्दा रह सकता हूँ कि मैं कैद होकर या पाबन्द होकर जीना नहीं चाहता।

मेरा नाम हिन्दुस्तानी क्रान्ति का प्रतीक बन चुका है और क्रान्तिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊँचा उठा दिया है- इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में

इससे ऊँचा मैं हरगिज़ नहीं हो सकता।

आज मेरी कमजोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं, अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे ज़ाहिर हो जायेंगी और क्रान्ति का प्रतीक-चिह्न मद्धिम पड़ जायेगा या सम्भवतः मिट ही जाय लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएँ अपने बच्चों को भगत सिंह बनने की आरज़ू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जायेगी कि क्रान्ति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

हाँ, एक विचार भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ भाग भी पूरा नहीं करा सके, अगर स्वतन्त्र जिन्दा रह सकता तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरत पूरी कर सकता।

इसके सिवाय मेरे मन में कभी कोई लालच फाँसी से बचने का नहीं आया। मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है, अब तो बड़ी बेताबी से अन्तिम परीक्षा का इन्तजार है, कामना है कि यह और नजदीक हो जाय।

आपका साथी

-भगत सिंह

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर सन् 1907 ई0 को पंजाब के लायलपुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह था। सरदार भगत सिंह बचपन से ही क्रान्तिकारी विचारों वाले थे। बड़े होने पर ये ब्रिटिश साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे। चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खाँ जैसे क्रान्तिकारियों की तरह ही भगत सिंह का नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। भगत सिंह हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सदस्य थे। साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के सिलसिले में पंजाब केशरी लाला लाजपत राय पर पुलिस ने प्राणघातक प्रहार किया था। पुलिस अधीक्षक सांडर्स को इसके लिए जिम्मेदार मानते हुए भगत सिंह ने गोलियाँ चलाकर उसकी हत्या कर दी थी। इसी मामले में दूसरा पुलिस अफसर मिस्टफर्म भी मारा गया था। ब्रिटिश सरकार ने अन्यायपूर्ण ढंग से इन्हें 23 मार्च सन् 1931 ई0 को फाँसी दे दी ।

शब्दार्थ

जिन्दगी = जीवन। **एलान** = घोषणा। **ताबेदार** = आज्ञाकारी। **हालात** = स्थिति। **तसल्ली** = सांत्वना, ढाढ़स। **क्रान्ति** = परिवर्तन के लिए आन्दोलन। **हरगिज** = कभी भी, कदापि। **जाहिर** = प्रकट। **प्रतीक-चिह्न** = पहचान। **मद्धिम** = धीमा। **आरजू** = कामना/इच्छा। **कुर्बानी** = बलिदान। **तादाद** = संख्या। **हसरतें** = इच्छाएँ। **साम्राज्यवाद** = अन्य देशों को अपने अधिकार में ले लेने और उन पर शासन करने की नीति। **सत श्री अकाल** = सिक्ख सम्प्रदाय में अभिवादन की शब्दावली। **साइमन कमीशन** = ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शासन में सुधार की दृष्टि से इस कमीशन का गठन किया था। इसके अध्यक्ष ‘साइमन’ नामक अंग्रेज थे।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. मोटे तौर पर पत्रों को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- व्यक्तिगत पत्र, व्यापारिक पत्र, शासकीय पत्र और सम्पादकीय पत्र। व्यक्तिगत पत्र अपने सम्बन्धित लोगों

को लिखे जाते हंै। इन पत्रों में प्रेषक को अपना पता और तिथि सबसे ऊपर दाहिनी ओर लिखना चाहिए। बाईं तरफ आदर सूचक (जैसे- पूज्य, महोदय) तथा प्रियता बोधक (जैसे- प्रिय) शब्द लिखना चाहिए। सम्बोधन के बाद तथ्य लिखे जाते हैं। पत्र के अन्त में हस्ताक्षर के पूर्व श्रद्धासूचक या प्रेमसूचक (जैसे- आपका आज्ञाकारी, तुम्हारा शुभेच्छु) शब्द का प्रयोग किया जाता है। उपर्युक्त संकेत के आधार पर अपने मित्रों को अपनी पढ़ाई की स्थिति के सम्बन्ध में पत्र लिखिए।

2. पत्रों के माध्यम से समाचार भेजने का मुख्य साधन डाकघर रहे हैं। किन्तु आज संचार की क्रान्ति का युग है। वर्तमान में पत्र के अलावा और कौन-कौन माध्यम हैं, जिनसे संदेश भेजा जाता है, लिखिए।

3. अपने पास के डाकघर में जाकर पता लगाइए कि पत्र किस प्रकार दूर-दराज के स्थानों पर पहुँचाये जाते हैं।

4. आप अपने जीवन में आगे क्या करना चाहते हैं और क्यों ? इसके लिए अपने माता-पिता को एक पत्र लिखें ।

विचार और कल्पना

1. भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर सन् 1907 ई0 को हुआ तथा उन्हें फाँसी 23 मार्च सन् 1931 ई0 को दी गयी। बताइए कि वे कुल कितने समय जीवित रहे ?

2. भगत सिंह के मन में देश और मानवता के लिए कुछ करने की हसरत थी। अपने देश और समाज की अच्छाई के लिए आप क्या कर सकते हैं ?

पत्र से

1. भगत सिंह ने अपने पत्र में माँ के लिए क्या संदेश भेजा ?

2. भगत सिंह किस शर्त पर जिन्दा रह सकते थे ?

3. भगत सिंह हँसते-हँसते फाँसी क्यों चढ़ना चाहते थे ?

भाषा की बात

1. 'क्रान्तिकारी दल' में 'दल' संज्ञापद है। 'दल' की विशेषता बताने वाला शब्द 'क्रान्तिकारी' विशेषण है। निम्नांकित शब्दों को पढ़िए और विशेषणपदों को चुनकर लिखिए:-

प्राणघातक प्रहार, दृढ़ कामना, अन्तिम परीक्षा, शैतानी शक्तियाँ, हिन्दुस्तानी माताएँ।

2. छोटी-छोटी में योजक चिह्न (-) का प्रयोग हुआ है। इस चिह्न का प्रयोग पाँच प्रकार से होता है-

(क) दो शब्दों के बीच 'और' के स्थान पर, जैसे- माता-पिता, रात-दिन।

(ख) पुनरुक्त शब्दों के बीच, जैसे- छोटी-छोटी, धीरे-धीरे।

(ग) दो शब्दों के बीच का, के, की, के स्थान पर, जैसे - देश-गान, त्याग-भाव।

(घ) तुलना के लिए प्रयोग में आने वाले 'सा', 'सी', 'से' के पूर्व, जैसे- गोला-सा, भोली-सी, विचित्र-से।

(ङ) दो शब्दों के बीच 'न' या 'से' आने पर, जैसे- एक-न-एक, बड़े-से-बड़े।

उपर्युक्त पाँचो प्रकार के योजक चिह्न युक्त शब्दों के एक-एक अन्य उदाहरण दीजिए।

3. 'बेचैन' में 'बे' उपसर्ग लगा है। इसी प्रकार 'प्र' उपसर्ग की सहायता से 'प्रबल' शब्द बनाया गया है। 'बे' और 'प्र' उपसर्ग से बने दो-दो शब्द लिखिए।

इसे भी जानें

'इन्कलाब जिन्दाबाद' - भगत सिंह